International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22
www.socialsciencejournal.in
Volume 3; Issue 4; April 2017; Page No. 68-69

गणेश शंकर विद्यार्थी : पत्रकार के रूप में

डॉ0 मिथिलेश सिंह

प्रवक्ता (राजनीति विज्ञान), के0 के0 पी0 जी0 कालेज, इटावा, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

पत्रकारिता किसी भी राष्ट्र या देश की प्रेरणादायिनी शक्ति होती है। पत्रकारिता सामाजिक जागरुकता की जगमगाती किरण है। समाचार पत्रों में केवल समाचार ही प्रकाशित नहीं होते वरन् मत या निर्णय भी प्रकाशित होते हैं। समाचार पत्रों में सम्पादकीय टिप्पणियाँ बड़ी महत्वपूर्ण होती है, जिनमें सम्पादक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक तथा राजनीतिक स्थितियों पर मुक्त मस्तिष्क से अपना विचार व्यक्त कर सकता है। अतः समाचार पत्र राष्ट्र को प्रेरणा भी देते हैं और दिशा–निर्देशन भी करते हैं। भारत में 'स्वतन्त्रता आन्दोलन' को पत्रकारिता के द्वारा ही शक्ति मिली। पत्रकारिता ने ही देश के सुप्त स्वाभिमान को जाग्रत किया तथा उन्हें यह प्रेरणा दी कि स्वतन्त्रता, राष्ट्रीय और एकता जैसे जीवन मूल्य ही मनुष्य के अस्तित्व को सुरक्षित रख सकते हैं। राष्ट्रीय भावना व जनमत को बनाने का महान कार्य समाचार पत्रों द्वारा ही संभव हो सका।

हिन्दी पत्रकारिता में श्री गणेश शंकर विद्यार्थी तथा उनके 'प्रताप' का योगदान सदैव स्मरणीय और प्रेरणा का बिन्दु बना रहेगा। कानपुर से 'प्रताप' पहले साप्ताहिक रुप से निकला और बाद में दैनिक हुआ। इसके प्रथम अंक में गणेश जी ने पत्रकारिता का जो दृष्टिकोण उपस्थित किया, उससे उनके उच्च आदर्शों एवं लक्ष्यों का परिचय मिल जाता है।

अधिकांश लोग गणेशशंकर विद्यार्थी को पत्रकार जीवन से ही जानते है। महाराजा प्रताप को सामने रखकर निर्भीकता, वीरता तथा कष्ट सहने की धीरता गणेश जी के पत्र 'प्रताप' में देखने को मिलती है। महाराजा प्रताप और गणेश जी के समाचार पत्र 'प्रताप' के चरित्र में समयानुकूल समानता देखने को मिलती है। गणेश जी ने स्वयं लिखा है– '' फिर वही दृश्य और वहीं कार्य। समय के पहिये घूमे और चित्तौड़ की स्वतंत्रता देवी ने दया से निर्दयता से फिर अपना खप्पर हाथ में लिया। 'प्रताप' में देश की आत्मा बोलती थी। उत्तर भारत में ब्रिटिश सत्ता को जिस रुप में 'प्रताप' ने चुनौती दी, उससे ब्रिटिश सत्ता की नींब हिल गयी।

गणेश जी ने पत्रकारिता प्रशिक्षण आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की 'सरस्वती' पत्रिका, सुन्दरलाल के 'भविष्य' तथा मालवीय जी के पत्र 'अभ्युदय' में लिया था। आपका प्रथम लेख 'हितवार्ता' में पराड़कर जी ने इस सती के प्रथम दशक में प्रकाशित किया था। गणेश जी का 'प्रताप' और प्रताप कार्यालय देश की आजादी पर मर मिटने वाले नवयुवकों का प्रेरणा एवं प्रशिक्षण केन्द्र बन गया था। गणेश जी के मित्र तथा सहयोगी पंडित बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' का कथन है कि ''नवयुवकों का परखना, उन्हें आश्रय देना उन्हें अनुप्राणित करना और उनके जीवन को बनाना गणेश शंकर जी की विशेष बात थी। वह अद्भुत थे। किसी प्रकार का प्रलोभन उन्हें डिगा नहीं सकते थे। सन् 1913 से 1930 तक इस देश में कोई भी ऐसा आन्दोलन नहीं हुआ जिसका प्रचार–प्रसार और आंशिक नेतृत्व गणेश शंकर विद्यार्थी ने न किया हो।''

''प्रताप'' कार्यालय में ही युवक भगत सिंह को राष्ट्रीयता तथा क्रान्तिकारिता की प्रेरणा मिली थी। पंडित माखनलाल चतुर्वेदी पंडित बाबूराम, विष्णु पराड़कर आदि से गणेश जी की हार्दिक घनिष्टता थी।

अमर शहीद गणेशशंकर विद्यार्थी ऐसे महान सम्पादक हुए है, जिन्होंने साम्प्रदायिक सद्भाव तथा एकता के लिए आत्म बलिदान किया। आपके निधन का समाचार सुनकर महात्मा गांधी ने 'व्यंग–इण्डिया' में लिखा था, ''उनका खून हिन्दू–मुसलमानों के दिलों को जोड़ने के लिए सीमेन्ट बनेगा।'' सन् 1931 में 25 मार्च को कानपुर भीषण दंगे में घिरे हुए मुसलमान परिवारों की रक्षा के लिए गणेशजी ने अपनी आत्महुति दी। दंगे की आग को फैलने से रोकने के लिए गणेश जी के साथ मुस्लिम स्वयंसेवक भी था।

वह अपने भाइयों को समझाता रहा कि इस महापुरुष ने सैकड़ों मुसलमानों को बचाया है। उत्तेजित मुसलमानों ने अपने रक्षक को भी नहीं पहचाना और पाशविक चीत्कार करते हुए उन पर टूट पड़े। विद्यार्थी जी ने अपने बधिकों के सामने सिर झुका कर जो अन्तिम शब्द कहे वे यों हैं, ''यदि मेरे खून से ही सींचे जाने से हिन्दू–मुस्लिम एकता का पौधा बढ़ सके और तुम्हारी खून की प्यास बुझ सके तो मेरा खून कर डालो।''

''आचार्य द्विवेदी जी के संस्मरण नामक लेख में श्री सद्गुरुशरण जी अवस्थी ने लिखा है कि– ''स्वर्गीय गणेश शंकर के प्रति उन्हें (द्विवेदी जी का) बड़ा स्नेह था। हिन्दू–मुस्लिम दंगे में उनके मारे जाने का समाचार सुनकर वह कानपुर आये। प्रताप प्रेस गये जिस कुर्सी पर गणेश जी बैठकर काम किया करते थे। उसके पास खडे होकर रो दिये। गदगद कण्ठ से कहने लगे कि सारे ज्ञान और विरक्ति की बार्ता मुझे सांत्वना नहीं दे पाते। मैं बहुत क्षुब्ध हूँ।

गुरु का शिष्य के प्रति यह प्रेम बहुत कम देखने का मिलता है और जब कभी भी शिष्य इस प्रेम को पा जाता है तो उसके महान होने पर जरा भी सन्देह नहीं रह जाता है। इस प्रकार गणेश जी ने पत्रकारिता की शिक्षा जिस गुरु से पायी उसी की आज्ञा पालन में अपना सब कुछ लुटा दिया।

पत्रकारिता को जिस अर्थ में गणेश जी समझते थे। इसका अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है। किन्तु उन्होंने स्वयं इसकी स्पष्ट व्याख्या की है तथा इस प्रकार अपने आदर्श महाराणा प्रताप तथा अपने गुरु द्विवेदी जी के विचारों से अपना समन्वय स्थापित किया है।

''पत्रकार का दायित्व'' नामक पत्र में गणेश जी ने लिखा है–'' संसार के अधिकांश समाचार पत्र धनवान लोगों द्वारा संचालित होते है। अपने संचालकों या उनके दल के विरुद्ध सत्य बात कहना तो बहुत दूर की वस्तु है। उनके पक्ष समर्थक के लिए वे हर तरह के हथकंडों से काम लेना अपना आवश्यक काम समझते है।''

''आज अपने ह्रदय में नई–नई आशाओं को धारण करके और अपने उद्देश्यों पर पूर्ण विश्वास रखकर ''प्रताप'' कर्मक्षेत्र में आता है। समस्त मानव जाति का कल्याण हमारा परमोद्देश्य है और इस उद्देश्य की प्राप्ति का एक बहुत बड़ा और बहुत जरूरी साधन हम भारत वर्ष की उन्नति को समझते हैं। उन्नति से हमारा अभिप्राय देश की कृषि, व्यापार, विद्या, कला, वैभव, मान, बल, सदाचार और सच्चरित्रता की वृद्धि से है। भारत को इस उन्नतावस्था तक

पहुँचाने के लिये असंख्य उद्योगों, कार्यों और क्रियाओं की आवश्यकता है। इनमें से मुख्यतः राष्ट्रीय एकता, सुव्यवस्थित, सार्वजनिक और सर्वांगपूर्ण शिक्षा का प्रचार, प्रजा का हित और भला करने वाली सुप्रबन्ध और सुशासन की शुद्ध नीति का राज कार्यों में प्रयोग, सामाजिक कुरीतियों का निवारण तथा आत्मावलम्बन और आत्म–शासन में दृढ़–निष्ठा है। हम इन्हीं सिद्धान्तों और साधनों को अपनी लेखनी का लक्ष्य बनावेंगे। हम अपनी प्राचीन सभ्यता और जातीय गौरव की प्रशंसा करने में किसी से पीछे न रहेंगे और अपने पूज्यनीय पुरुषों के साहित्य दर्शन, विज्ञान और धर्म–भाव का यश सदैव गावेंगे। किन्तु अपनी जातीय निर्बलताओं और सामाजिक कुसंस्कारों तथा दोषों को प्रकट करने में हम कभी बनावटी जोश या मसलहत–वक्त से काम लेंगे, क्योंकि हमारा विश्वास है कि मिथ्या अभिमान जातियों के सर्वनाश का कारण होता है। किसी की प्रशंसा या अप्रशंसा, किसी की घुड़की या धमकी हमें अपने सुमार्ग से विचलित न कर सकेगी। साम्प्रदायिक और व्यक्तिगत झगड़ों से 'प्रताप' सदा अलग रहने की कोशिश करेगा।

श्री गणेश शंकर विद्यार्थी के 25 मार्च के बलिदान का स्मरण करते हुये श्री माखनलाल चतुर्वेदी ने जो उद्‌गार व्यक्त किये थे वे इस प्रकार हैं, ''उस दिन हिन्दी संसार ने अपना जाज्वल्यमान वर्तमान खोया। भारतीय पत्रकार जगत ने एक आदर्श प्रेरक खोया, भिन्न–भिन्न क्षेत्रों में परिस्थितियों से जूझने वाले कार्यकर्ताओं ने अपना नेता और संरक्षक खोया और हिन्दू मुस्लिम मेल में आजाद भारत की झांकी देखने वाले महात्मा गाँधी ने साम्प्रदायिक क्रूरता की वेदी पर वह उपहार खोया, जिसकी उज्जवल पवित्रता, बेदाग ईमानदारी और निर्मल समर्पण पर कुरबानी स्वयं कुरबान रही। मार्च की वह 25वीं तारीख क्या सन् 1931 से पहले भी इतनी निष्ठुर हुई थी।''

गणेश जी के 'प्रताप' का उल्लेख करते हुए श्री माखनलाल चतुर्वेदी कहते हैं, 'प्रताप' एक दिन उनकी शक्ति था, दूसरे दिन हिन्दी जगत् की श्रद्धा बना और वह उनकी शुभ–स्मृति है। पत्रकार कला के हिन्दी स्वरूप के 'प्रताप' नामक राष्ट्रमंच से गणेश जी ने कायरों को देश घातकों को, महलों को, मुकटों को, अत्याचारियों और स्वार्थियों को लगातार चुनौतियां दीं और परिणाम में तलाशियाँ, अपमान, अर्थहानि और कारागार सहे।

श्री गणेश शंकर विद्यार्थी ने देश–भक्ति का जो आदर्श रखा, उसे वर्तमान रणनीतिज्ञों को स्मरण रखना चाहिए तथा देश की नयी पीढ़ी को प्रेरणा लेनी चाहिए। पत्रकारिता के क्षेत्र में उन्होने जो निर्भीकता तथा दृढ़ता व्यक्त की वह अनुपम और आदर्श है। जो लोग विशुद्ध क्रान्ति के उपासक थे उनकी भी सहायता गणेश जी करते थे। इस प्रकार 'प्रताप' के माध्यम से हिन्दी की पत्रकारिता का त्याग परम्परा और क्रांतिकारिता का इतिहास बन रहा था। धनिक शक्तियां जब भी प्रताप पर हावी होती तब गणेश जी स्पष्ट कहते हैं कि मैं किसी भी मूल्य पर 'प्रताप' को 'प्रताप' के द्वारा गरीबों की शक्ति को पराजित नहीं होने दूँगा।

स्वयं अपने जीवन में इन्हीं आदर्शों को उतारकर, उन्होने अकथ परिश्रम से 'प्रताप' को हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ समाचार–पत्र बना दिया। समाचार पत्रों का समाज के प्रति बहुत बड़ा दायित्व है और उसका निर्वाह, केवल त्याग से ही सम्भव है यह स्वयं अपने सफल जीवन में प्रमाणित कर स्व0 विद्यार्थी जी जो एक सत्य प्रतिपादित कर गये वह हैं, कि आचरण के क्षेत्र में यह तब ही सम्भव है जब हम ''मति–गति में सदैव शुद्ध रहें।''

इसमें कोई सन्देह नहीं कि आज हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र में हमें सर्वसाधारण के हित की सच्ची भावना यदा कदा ही देखने को मिलती है। यदि कहीं अन्याय के विरुद्ध कोई स्वर प्रखर होता है तो उसमें भी एक दब्बूपन एवं सहमी सी विरोधी गूँज रेंग रही थी नजर आती है। खरी पत्रकारिता के दो पलड़े हैं, इसे हमें स्मरण रखना चाहिए। प्रमाण देने में जब पहले हमें अपने स्वार्थ की चिन्ता रहती है, कहीं ऐसा न हो कि प्रमाण देने में हम शासन तन्त्र को कुपित कर दें। पत्रकार जब तक स्वयं अपने विवके से काम न लें वह कभी एक सफल पत्रकार नहीं हो सकता। स्व0 विद्यार्थी जी ने विवेकशीलता को पत्रकारिता का अनिवार्य अंग माना है। पैसा कमाना ही पत्रकारिता का ध्येय न हो, उसका मुख्य उद्‌देश्य हो लोकसेवा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः

1. अमर शहीद गणेश शंकर विद्यार्थी– पुरुषोत्तमदास मोदी।
2. महाराणा प्रताप–गणेश शंकर विद्यार्थी के श्रेष्ठ निबन्ध, सम्पादक– राधाकृष्ण, पृष्ठ–7
3. आचार्य द्विवेदी जी संस्मरण– श्री सद्‌गुरुशरण जी अवस्थी, हिन्दी पत्रिका, ''आजकल'' अक्टूबर–1964
4. प्रताप की नीति– गणेश शंकर विद्यार्थी, लेखक देववृत शास्त्री, पृष्ठ संख्या : 132–133।